लक्ष्मीवान् बनने के स्वप्न को करें साकार

कनकप्रभा साधना

साधना का एक रहस्य यह है कि इसमें अचानक छलांग मारकर बड़ी उपलब्धि अर्जित करने की अपेक्षा यदि लघु स्वरूपों और शीघ्र प्रकट होने वाले स्वरूप की साधना व आराधना करें तो जीवन में शीघ्र ही समस्त सफलताएं और अनुकूल स्थितियां निर्मित होने की दशा निर्मित हो जाती है। ठीक यही बात भगवती महालक्ष्मी के स्वरूप के साथ भी है साधना के प्रथम चरण में ही भगवती महालक्ष्मी का साक्षात् दर्शन पाना या उनके द्वारा मनोवांछित वर प्राप्त कर लेना साधक के लिए संभव नहीं है, इसकी अपेक्षा यदि वह देवी के किसी विशिष्ट स्वरूप की साधना करता है अपने भौतिक जीवन की कामनाएं तो शीघ्रता से पूर्ण करता ही है, साथ ही साथ धनात्मक दृष्टि से भी कुछ पग और आगे बढ़ जाता है।

प्रस्तुत साधना एक ऐसी ही साधना है। समय-समय पर युग दृष्टा ऋषियों और मंत्र-सृष्टा चिन्तकों ने एक ही साधना के जो विभिन्न रूप ढूंढे, उन्हें अपनी अनुभूति के आधार पर अलग-अलग नामों से संबोधित किया और यह उनके प्राणों का बल होता है कि वे मंत्रों के प्रभाव से देवी का वही स्वरूप गठित कर उन्हें उपस्थित होने के लिए विवश कर देते हैं। कनक प्रभा साधना ऐसी ही मांत्रोक्त साधना है जहाँ पर प्रखर ऋषि और युग दृष्टा महर्षि याज्ञवल्क्य ने महालक्ष्मी को कनकप्रभा रूप में उपस्थित होने की एक विशिष्ट पद्धति ढूंढ निकाली।

एक युग पूर्व युगपुरुष आद्यशंकराचार्य जी ने जिस प्रकार से एक धनहीन विप्र की दरिद्रता से व्यथित होकर भगवती महालक्ष्मी का आवाहन कनक धारा रूप में किया था और देवी से प्रार्थना की थी कि वे अपने नाम के ही अनुकूल अपने प्रभाव से स्वर्ण की धारा जैसी समृद्धता प्रवाहित कर दें, ठीक उसी क्रम में उससे भी अधिक प्राचीन और सरल पद्धति से रची गयी साधना है- कनकप्रभा साधना और तथ्य तो यह है कि इसी साधना के आधर पर कनकधारा देवी का चिंतन भगवतपाद ने अपने प्रसिद्ध स्तोत्र में किया है। प्राचीन कनकप्रभा ही उनके द्वारा कनकधारा रूप में विख्यात हुई।

देवी के उस स्वरूप को कनकधारा कहें अथवा कनकप्रभा का सम्बोधन दें तात्पर्य केवल एक ही है कि घर में और सन्यासी हो तो उसके आश्रम में धन का ऐसा प्रवाह आरम्भ हो जाए जो स्वर्णवर्षा जैसा हो क्योंकि धन की प्रचुरता से ही संभव है जीवन में प्रसन्नता का आगमन। धन केवल आवश्यकता अनुसार ही उपलब्ध होना जीवन की श्रेष्ठता नहीं है। धन का वास्तविक आनन्द यह है कि धन आवश्यकता से कहीं अधिक उपलब्ध हो, जिससे वर्तमान की सभी समस्याएं सुलझे ही, भावी जीवन के लिए हमारे मन में कोई आशंका या चिंता न रहे, क्योंकि जहा कल की चिंता है वहां निश्चितता नहीं और जहाँ निश्चितता नहीं वहाँ फिर कोई श्रेष्ठ धार्मिक या अध्यात्मिक चिंतन नहीं। नित्य प्रति की दरिद्रता धीरे-धीरे व्यक्ति के अन्दर घुलती हुई उसके मन, प्राण, आत्मा तक को दरिद्र, हीन और पतित बना देती है। जीवन की इन्हीं स्थितियों को समाप्त करने की साधना है... कनक प्रभा।

भगवती महालक्ष्मी के साक्षात् उपस्थित होने का अर्थ यही होता है कि हमारे जीवन में अनुकूलता प्रारम्भ हो, हमारे जीवन में मधुरता का आरम्भ हो। पौरुष और क्षमता का अतिरिक्त प्रभाव हो और यही लक्षण जीवन में आते हैं किसी साधना के माध्यम से या, किसी दैविक शक्ति शरीर में समाहित हो जाने से। और फिर कनक प्रभा... तो साक्षात् उपस्थित हो जाने वाला स्वरूप है। अपने चैतन्य स्वरूप से साधक को आश्वस्त कर देने वाला स्वरूप है, जिससे साधक के मन में कोई द्वंद्व न रहे और वह निश्चिंत होकर साधना के मार्ग पर तेजी से गतिशील हो सके।

"पद्म की मंद आभा के समान वस्त्र धारण किये हुए विशाल चाक्षुषी देवी जिनकी पलकें उधमुंदी जिनके नयनों के दौर कर्णों को स्पर्श करते हुए प्रतीत होते हैं ऐसी सघन सुगन्धित केश युक्ता, पद्मगन्धा, सुमधुर गंध से समस्त वातावरण को आप्लावित करती हुई देवी कनकप्रभा अपने शरीर पर धारण किये हुए विविध स्वर्णाभूषणों से वातावरण को लिए प्रकारण शोभायमान कर रही है और जिनकी स्वर्णिम आभा से युक्त मुख श्री को देखते ही चित्त उनके चरणों में स्वतः नत हो जाता है उन देवी कनकप्रभा के चरणों में मेरा मस्तक सदा ही अवनत रहे।" देवी के उपरोक्त कनकप्रभा स्वरूप की ध्यान और स्तुति से स्पष्ट होता है कि वास्तव में कनक- प्रभा भगवती महालक्ष्मी का ही स्वर्णिम और वरदायक स्वरूप है, ऐसे वरदायक स्वरूप की अभ्यर्थना करने की अपेक्षा किसी अन्य स्वरूप की आराधना फिर कहां तक तर्क सम्मत और बुद्धिमत्ता पूर्ण होगी। आगे इसी ध्यान में वर्णित है कि कनकप्रभा देवी के दोनों हाथों में से एक वर मुद्रा एवं दूसरा अभय मुद्रा में अवस्थित है, जिससे स्पष्ट होता है कि उनका यह स्वरूप पूर्ण रूप से अनुग्रहकारी है।

कनक प्रभा देवी तो मूलतः रस सिद्ध योगियों की पारद विज्ञानियों की आराध्या रही है क्योंकि इन्हीं की साधना पद्धतियों में छिपा है स्वर्ण निर्माण का रहस्य। स्वर्ण निर्माण जहां पारद विज्ञान के माध्यम से संभव है, जहां रसायन के माध्यम से संभव है, वही मांत्रोक्त पद्धति से भी पूर्ण रूप से संभव है, और कहते हैं इस साधना में सफलता मिलने पर देवी कनकप्रभा के इसी मंत्र में निहित वह गुप्त क्रिया भी प्राप्त हो जाती है जिसके द्वारा केवल तांबे को ही नहीं वरन् अन्य सभी धातुओं को भी स्वर्ण में परिवर्तित किया जा सकता है।

यह तीस दिनों की साधना है और मांत्रोक्त साधना होने के कारण अपने गर्भ में, अपने आधार में, श्रद्धा विश्वास और भक्ति की अपेक्षा प्रबलता से सिद्ध होती है यह साधना। यदि कार्तिक माह के किसी भी दिन से प्रारम्भ कर आगे के तीस दिनों तक नियमित रूप से की जाय तो श्रेष्ठतम माना गया है अन्यथा किसी भी माह के शुक्ल पंचमी से प्रारम्भ किया जा सकता है, इसमें कोई दोष नहीं, यह साधना लम्बी अवश्य है किन्तु जटिल नहीं। महत्व केवल इस बात का है कि साधक

इस पूरे एक माह में श्रद्धापूर्वक सरलता और ब्रह्मचर्य से जीवन-यापन करें, केवल एक समय ही भोजन करें और दूसरे समय फलाहार अथवा दुग्धाहार लें, भूमि शयन करें और तामसिक विचारों से सर्वथा परे रहे। इसके अतिरिक्त कोई बंधन नहीं है। साधक अपने नित्य प्रति के जीवन को यथावत जी सकता है, व्यवसाय का कार्य कर सकता है, नौकरी पर जा सकता है, यात्राएं कर सकता है तथा भौतिक जीवन के लिए जो कुछ भी आवश्यक है उसे करने में कोई दोष नहीं ।

साधना विधान-

मंगल, शनि एवं रविवार को छोड़कर जिस दिन भी यह साधना प्रारम्भ करें उस दिन साधना कक्ष स्वच्छ और साफ हो, श्वेत आसन अथवा लाल रंग का ऊनी आसन बिछाएं और एक पात्र में गणपति विग्रह रख उनका पूजन केशर, अक्षत, पुष्प से करें। स्वस्ति पाठ करें।

ॐ श्रीं गणपतये नमः ऋद्धि सिद्धि सहितं मम गृहे महागणपतिं आवाहनं समर्पयामि। सुमुखश्चैक दन्तश्च कपिलो गजकर्णक, लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायक। धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननं, द्वादशैतानि नामानि च पठेच्छ्रणुयादपि। विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा, संग्रामें संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते।

इसके उपरान्त भूमि पर त्रिकोण बना कर (जो आप केशर अथवा अष्टगंध से बना सकते हैं) इसके ऊपर श्वेत आसन बिछायें और निम्न मंत्र पढ़ते हुए आन्तरिक और बाह्य शुद्धि करें --

ॐ अपवित्रः पवित्रो व सर्वास्थां गतोऽपि वा,
यः स्मरेत पुण्डरीकाक्षं सः बाह्याभ्यारतं शुचिः।

तत्पश्चात मुख शुद्धि -

ॐ अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा,
ॐ अमृतापिधानामसि स्वाहा,
ॐ सत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीश्रयतां स्वाहा।

(पढ़ते हुए तीन बार जल मुंह में डालें)

पृथ्वी पर हाथ रखकर आसन शोधन करें -

ॐ पृथ्वीत्वया घृता लोकांदेवि त्वं विष्णुना घृता।
त्वं च धारय मां देवी पवित्रं कुरु चासनम् ।।

अब मूल साधना में प्रवृत्त हों। भगवती महालक्ष्मी का महालक्ष्मी यंत्र स्थापित करें और प्रार्थना करें कि- मैं भगवती महालक्ष्मी के ही शीघ्र फलदायक स्वरूप कनक प्रभा की साधना में प्रवृत्त हो रहा हूँ, भगवती महालक्ष्मी मुझे यथा-शीघ्र सफलता प्रदान करें और ऐसा कहकर किसी श्रेष्ठ धातु के पात्र में (श्रेष्ठ धातु के अभाव में पुष्प पंखुड़ियों पर) पारद शंख स्थापित करें यदि आपके पास पहले से कोई पारद शंख हो और उस पर साधना की गई हो तब भी वह पूर्ण फलदायक है।

पारद एक ऐसी चैतन्य धातु है, जिससे निर्मित कोई भी विग्रह अपने आप में श्रीयुक्त होता ही है और इसी विशेषता से कनकप्रभा की साधना पारद शंख पर निश्चित रूप से फलदायी होती है क्योंकि पारद और स्वर्ण निर्माण का घनिष्ठ संबंध होता ही है। इसी साधना को अन्य दो विधियों से भी किया जा सकता है। जिन्हें मैं स्थानाभाव से देने में असमर्थ हूं तथा सर्वाधिक प्रमाणिक विधि यही है।

इस दुर्लभ पारद शंख पर अष्ट गंध से स्वस्तिक का निर्माण करें, गुलाब की पंखुड़ियां चढ़ाएं और एक बड़ा दीपक शुद्ध घी का जलाकर भगवती लक्ष्मी व उनके साकार प्रतीक विग्रह रूप में पारद शंख का संयुक्त पूजन करें और प्रार्थना करें।

देवी कनकप्रभा इसी पारद की भांति बद्ध होकर अपने सहोदर तुल्य इस पारद शंख के रूप में मेरे घर में स्थायी निवास करें। भगवती महालक्ष्मी एवं शंख का पूजन सुगंध, कुंकुम, अक्षत, पुष्प, पंचामृत, दुग्ध निर्मित नैवेद्य, ताम्बूल एवं पुंगी फल (सुपारी) से करें। दक्षिणा रूप में इलाइची एवं लौंग समर्पित करें। स्फटिक माला से निम्न मंत्र की 11 माला मंत्र जप सम्पन्न करें और मंत्र जप की समाप्ति पर एक बार पुनः कर्पूर आरती से महालक्ष्मी की आरती सम्पन्न कर "क्षमस्व परमेश्वरी" कहकर स्थान छोड़ें। इस साधना में प्रयुक्त होने वाला मंत्र है --

ॐ ह्रौं ह्रं ह्रीं कनक प्रभा मम गृहे आगच्छ स्थापय फट्।

इस साधना में यह आवश्यक नहीं की आपने प्रथम दिन जिस समय साधना प्रारम्भ की, उसी समय से नित्य प्रति साधना प्रारम्भ करें। लेकिन एक क्रम निश्चित कर सकें तो लाभदायक रहेगा। यदि इन तीस दिनों में घर से बाहर जाना पड़े तब भी इस साधना को निरंतर कर सकते हैं, पारद निर्मित विग्रह को यात्रा में ले जाना शास्त्र सम्मत माना गया है। स्त्रियां रजस्वला काल में साधना स्थगित कर शेष दिनों में साधना पूर्ण कर सकती हैं, इसे व्यवधान नहीं माना जाता। साधना के आरम्भ करने के तीन-चार दिन के बाद से मधुर सुगंध साधना कक्ष में पद्चाप, पायलों अथवा करधनी की ध्वनि, वस्त्रों की सरसराहट, कर्पूर की सुगंध, शीतलता जैसे विविध अनुभव प्रारम्भ हो तो साधक और सजग हो जाए क्योंकि कनकप्रभा साधना के मध्य में ही उपस्थित हो जाती है।

कनकप्रभा का साधना के मध्य में उपस्थित होना साधना की पूर्णता मान लेना उचित नहीं क्योंकि यह एक निश्चित क्रम है तथा तीस दिन का साधनामय जीवन व्यतीत करना आवश्यक है। प्रतिदिन इस साधना की सामाप्ति पर सस्वर आद्यशंकराचार्य प्रणीत "कनक धारा स्तोत्र" का पाठ करना चाहिए क्योंकि कनकधारा और कनकप्रभा एक ही देवी के दो विभिन्न ढंग से वर्णन है।

घुड़दौड़ में मिलने वाली सफलता हो या लाटरी में लेने वाला नम्बर, कौन व्यक्ति हमारे जीवन में लाभदायक होगा, किस स्त्रोत से हमें धन मिलेगा, किस व्यापार से रातों-रात लाभ हो जायेगा, ऐसी अनेक स्थितियां व्यक्ति को कनक प्रभा देवी के माध्यम से स्पष्ट होने लगती है, आवश्यकता है तो साधक के सतर्क और चौकन्ना रहने की क्योंकि साधना के पूर्ण होने से पूर्व भी सफलताएं मिलती देखी गयी है। समस्त सामग्री एक माह पश्चात् लक्ष्मी-विष्णु मन्दिर में उनके चरणों में छोड़ आये।

सामग्री न्यौछावर- 3100/-

♦♦♦

आश्चर्यजनक लक्ष्मी प्राप्त करने के लिए चौतीसा यंत्र की अंगूठी

यंत्र पहिर चौतीसा। धन, सुख, भाग अनीसा।।

अर्थात्- जो अपनी अंगुली में चौतीसा यंत्र की अंगूठी बनवाकर धारण कर लेता है, वह आश्चर्यजनक रुप से लक्ष्मी प्राप्त करने लगता है, जिस प्रकार का भी भोग वह चाहता है, वह भोग सुख, ऐश्वर्य उसे अनायास ही प्राप्त होने लगता हैं। इस अंगूठी की विशेषता है कि इसके धारण करने से आर्थिक दृष्टि से निरन्तर उन्नति होती रहती है, चारों तरफ का वातावरण कुछ ऐसा बन जाता है कि उसके आर्थिक स्त्रोत चारों तरफ से खुल जाते है, अच्छे व्यक्तियों से परिचय और संपर्क बनता है और उनके माध्यम से ही जीवन में भोग एवं ऐश्वर्य की प्राप्ति होने लगती है। गुरु गोरखनाथ के अनुसार चौतीसा यंत्र और बीसा यंत्र का एक सा प्रभाव है और दोनों ही कलयुग में अपने आप में अत्यन्त महत्वपूर्ण है, इसे बाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में पहना जाना चाहिए।

यदि कहीं पर रुपया फँसा हुआ हो या निकल न रहा हो तो इसके पहनने से कार्य सम्पन्न होने लगता है। इस अंगूठी की यह विशेषता है कि यदि व्यक्ति पर कर्जा हो तो शीर्घ ही उतर जाता है, व्यापार नहीं चल रहा हो तो इसके पहनने से व्यापार बढ़ने लगता है, नया व्यापार शुरु होने लगता है, रुके हुए व्यापार में तेजी आने लगती है, व्यापार में आय अधिक होने लगती है। एक प्रकार से देखा जाये तो घर में धन की वर्षा होने लगती है। वास्तव में यह अंगूठी कलियुग में कल्पवृक्ष के समान हैं।

न्यौछावर राशि चौतीसा यंत्र पैंडल- **900** रुपये। चौतीसा यंत्र अंगूठी- **1100** रुपये।